UGC Approved Journal
Research Link
Since March 2002
An International, Registered & Refereed Monthly Journal : Drawing
Research Link - 171, Vol - XVII (4), June - 2018, Page No. 100-101
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782

मुगलकाल की चित्रकला - अकबर के विशेष संदर्भ में

प्रस्तुत शोधपत्र में अकबर के विशेष संदर्भ में मुगलकाल की चित्रकला का अध्ययन किया गया है। अकबरकालीन चित्रों के महत्वपूर्ण विषयों में पेड़, पौधे, पशु-पक्षी आदि का एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। एक अन्य महत्वपूर्ण आकर्षण विभिन्न श्रेणियों में व्यक्तियों का प्रस्तुतिकरण है, जिसे अकबर के चित्रकारों ने अपने चित्रों में प्रस्तुत किया है। सूफी सन्तों का चित्रण भी अकबरकालीन चित्रों में दृष्टिगोचर होता है। अकबर खुद सूफी सन्तों का बहुत आदर करता था। अकबरकालीन चित्रकला भिन्न-भिन्न चित्रों की कला थी, जिसमें अधिकतर लघु पुस्तक चित्रण हुआ है। अकबरकालीन चित्रकारों ने छवि चित्रों में भी विशेष सफलता प्राप्त की थी।

डॉ.(श्रीमती) वीणा चौबे

इस्लाम में चित्रकला को प्रोत्साहन मिलने के कारण अनेक उत्कृष्ट कृतियाँ तैयार हुई। विशेष पवित्र समझी जाने वाली तथा सामन्तों के जीवन एवं इतिहास से सम्बंधित पुस्तिकों को सुन्दर बनाने की प्रकृति का विकास ईरान में विशेष उपलब्धि पूर्ण मिलता है। ऐतिहासिक पुस्तकों में फिरदोसी कृत ''शहनामा'' का चित्रण कई बार कराया गया। यह एक शाही ऐतिहासिक ग्रन्थ है। ईरान में इस ग्रन्थ को कई बार चित्रित करवाया गया। अकबर ने जिस चित्रकला प्रेम के वशीभूत होकर इस विषयवस्तु को चित्रित करवाया। वहीं ईरान में चित्रकारों का विषय समाजिक था। धार्मिक विषयों का अभाव या धार्मिक कट्टरपंथिता के कारण धार्मिक ग्रन्थों की रचना नहीं की गई। शहनामा की ऐसी विषय वस्तु थी, जो ईरान और भारत में समय पर चित्रित की जाती रही।

एक अन्य ऐतिहासिक ग्रन्थ ''हमजानामा'' का चित्रण अकबर ने करवाया। यह ग्रन्थ मुहम्मद साहब के समकालीन हमीरहमजा की कहानी पर आधारित है। अकबर ने इन किस्सोम की प्रमुख घटनाओं का चित्रण भी कराया था। प्रमुख घटनाओं के साथ–साथ गद्य रचनाओं एवं फारसी भाषा की पद्य रचनाएँ भी चित्रित की गयी। सादिकृत बास्तो के अतिरिक्त ''गुलिस्तों'' नामक काव्य संग्रह भी ईरान में चित्रित कराया गया। भारत में इसका चित्रण अकबरी शैली में कराया गया। एक अन्य काव्य रचना हफिज कृत ''दीवान'' का चित्रण भी ईरानी लघुचित्रण परम्परा का प्रमुख ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ 1560 ई0 में अकबर द्वारा अपने दरबारी चित्रकरों से चित्रित कराया गया था। हाफिज शिराज की शेर शयरी की पुस्तक है, जिसमें बड़ी– बड़ी समस्याओं का निदान वर्णित है। अकबर काल में हाफिजकृत ''दीवान'', अमीर खुसरो दलवी कृत ''दीवन'' के समान विभिन्न कवियों द्वारा रचित नसीर उद्दीन पर चित्रण कार्य हुआ। एक अन्य चित्रित ग्रन्थ सिल्सला–ए–महजदब जो कवि नूरददीन जामी की कृति है।

इरानी चित्रकला में समाजिक और ऐतिहासिक ग्रन्थों के साथ ज्योतिष विज्ञान से सम्बंधित ग्रन्थों पर भी चित्र बनाए गए। नसीरउद्दीन तोसी कृत ''ज्योतिष ग्रन्थ'' बहुत प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्तन मुनील अल अहरार वैज्ञानिक आधारित पुस्तक ''किताब अले बुलहन'' और ''एन्थोलॉजी ऑफ इस्किन्दतर'' सुल्तावन पर की गई चित्रकारी से सम्बंधित है। अकबर काल में लगभग सभी विषयों पर चित्र बने और तिलिस्म और राशिचक्र ज्योतिष विवरणों से सम्बंधित ग्रन्थ है, जिसका अनुवाद व चित्रण अकबर ने अपने दरबारी चित्रकारों से कराया। शिक्षा मूल में भारतीय मूल की पुस्तक पंचतंत्र विश्व प्रसिद्ध पुस्तक है। इसका चित्रण अकबर काल में कई बार हुआ। कलिका और दिम्नातं के आधार पर अकबर ने एक अन्य अनुवाद अबुलफजल से दर्निश नाम से कराया। पंचतंत्र के इन अनुवादों को बादशाहों ने अपनी रूचि के अनुसार बार–बार चित्रित कराया।

पंचतत्र के चित्रण के अतिरिक्त अन्य किसी भारतीय ग्रन्थ का चित्रण इरान की चित्रकला में नगण्य है, परन्तु अकबर ने अपने व्यक्तिगत प्रेम के फलस्वरूप अभारतीय ग्रन्थों के अतिरिक्त अनेक भारतीय ग्रन्थों का फारसी भाषा में अनुवाद करवाया और उन्हें चित्रांकित कराया। अब्दुल कादिर बदॉयूनी, अकबर के दरबार में संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान थे, जो अरबी–फारसी भाषाओं का बहुत बड़े ज्ञाता थे। महाभारत का फारसी अनुवाद इन्हीं ने ''राज्यनामा'' नाम से किया, जिस पर लगभग 50 चित्रकारों ने कड़े परिश्रम से 166 चित्र बनाये, जो तीन बड़े सचित्र जिल्दों में तैयार किए गए। बसावन, तुलसी, लाल व मिस्कीडन आदि चित्रकारों ने इस ग्रन्थ को चित्रित किया। इन चित्रो में इरानी की अपेक्षा राजस्थानी और कश्मीरी शैली का प्रभाव अधिक है। अकबर का समय ग्रन्थ चित्रण का युग था। कई ग्रन्थों में शिव सम्बंधी चित्र बने। शिव पुराण का अलग से चित्रण हुआ है। जैसे ''राज्यनामा'' में शिव को यज्ञ का यश्र भस्म करते हुए

विभागाध्यक्ष (चित्रकला विभाग), अटल बिहारी हिन्दी विश्वविद्यालय, भोपाल (मध्यप्रदेश)

चित्रित किया है। एक अन्य चित्र में अश्वत्थामा को पांडवों के पडाव में आक्रमण करते दिखाया गया है। यह रेखा चित्र 1580 ई. में दसवन्त द्वारा बनाया गया। 'अम्बा' शीर्षक चित्र राज्यनामा का ही एक पृष्ठ है, जिसमें अम्बा के चारों ओर कई राजा है और वह स्वयं को अग्नि में भस्म कर लेती है। यह रेखाचित्र लाला द्वारा चित्रित किया गया है। 'योग वशिष्ठ' में शिव–पार्वती का साधु के समक्ष उपस्थित होने का दृश्य प्रस्तुत किया गया है।

भारतीय कथा वस्तु में रामायण एक प्रसिद्ध धार्मिक ग्रन्थ है। इसका अनुवाद भी फारसी भाषा में कराया गया, जिसका चित्रण कार्य 1588 ई. करवाया गया। इसमें आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि भारतीय मूल की पुस्तक को चित्रित करने में तीन चित्रकारों को छोड़कर शेष सभी चित्रकार मुस्लिम थे, जिन्होंने ग्रन्थ में वर्णित विचारों को हू–ब–हू चित्रों में उतारा और भारतीय प्रभाव से परिपूर्ण किया। रामायण और महाभारत जैसे महान भारतीय धार्मिक ग्रन्थों का अनुवाद कराना, इन पाण्डुलिपियों को चित्रित करना, अकबर की भारतीय भावना का प्रबल उदाहरण है। विभिन्न धर्मों और साहित्य में अकबर की रूचि ने ही उसे हिन्दू धर्म से परिचित कराया और हिन्दू पुराणों और रचनाओं का चित्रण व अनुवाद कराने के लिए प्रेरित किया। कुछ लघु चित्र भी बने, जिनमें एक में गणेश, त्रिनेत्र चर्तुभुज, गले में सर्प लपेटे कमल पुष्पों पर बैठे हैं, साथ में चारभुजाधारी सरस्वती पालथी मारे बैठी है। ये विंध्या की देवी गणपति से वार्तालाप कर रही है। गणेश के पास ही उनकी पत्नी का अंकन है, इस चित्र में 'सीता की अग्नि परीक्षा' का चित्र है, जिसमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों देवों को खड़े दिखाया गया है। यह अत्यन्त सुन्दर चित्र अकबर काल में चित्रित भारतीय चित्रों की गहनता को दर्शाता है। अकबर के बाद धार्मिक कट्टरवादिता के कारण भारतीय विषयों का चित्रण नहीं हुआ। यह प्रवृत्ति अकबर काल की महान उपलब्धियों में नगण्य है।

अकबर ने हिन्दू धर्म को बड़े ही विनम्र और सादगी से अपनाया था। उसने हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों और देवी–देवताओं का चित्रण बड़े सम्मान के साथ करवाया था। साथ ही अकबर ने अपने समय के ग्रन्थों की विषय वस्तु को पर्याप्त विकसित किया था। वाचस्पति गैरोला के अनुसार समाज का शाही पौथीखाना चौबीस हजार हस्तलिखित कलापूर्ण पुस्तकों से सुसज्जित था। ऐतिहासिक महत्व की सचित्र पोथियों की संख्या सैंकड़ों में थी। तैमूर वंश से लेकर अकबर के 1577 ई. तक जीवन के वर्णन का चित्रण तारीखे–खानदाने–तैमिरिया ग्रन्थ में है। ''अकबरनामाः: में अकबर के जीवन की विभिन्न शैलियों का चित्रण है, जिनमें अधिकांश शिकार, युद्ध सम्बंधी दृश्य हैं। इनके अलावा फतेहपुर सीकरी का निर्माण, तमाशा दिखाते अकबर, सलीम जन्मोत्सव आदि के अनेक दृश्यों का यथार्थ चित्रण इस ग्रन्थ में किया गया है। साथ ही अकबर ने और भी विषयों पर चित्रण कार्य करवाया, जो अकबर कालीन चित्रण के अंतर्गत सम्मिलित हैं, जैसे बाबर की अपनी आत्मकथा तुर्की भाषा में लिखी, जिसका फारसी भाषा में अनुवाद अकबर ने करवाया। बाबर के जो शौक थे, उनमें उद्यान लगाना, अपने बागों में दावत का आयोजन, बागों की देख–रेख करना आदि का अकबर कालीन चित्रकारों ने बड़े ही भावपूर्ण ढंग से चित्रण किया है। इसके अतिरिक्त 'व्यक्ति चित्रण' भी अकबर काल में शुरू हो गया था। जैसे दरबारी नर्तकी, संगीत वादन आदि की छवियाँ चित्रित करवाई। इसके साथ अकबर ने अपनी स्वयं की छवि बनवाई, जिसमें अकबरकालीन चित्रकारों ने अपनी निपुणता दिखाई है। अकबर को व्यक्ति चित्रों का बड़ा शौक था। स्वयं भी छविचित्रों को तैयार करता था। इस काल के व्यक्ति चित्र सर्वोत्कृष्ट रूप में मिलते हैं, जिनकी विशेषता चेहरे के 'भावार्थ और सच्चाई है।

अकबरकालीन चित्रों के महत्वपूर्ण विषयों में पेड़, पौधों और पशु–पक्षी आदि का एक महत्वपूर्ण स्थान है। एक अन्य महत्पूर्ण आकर्षण विभिन्न श्रेणियों में व्यक्तियों का प्रस्तुतिकरण है, जिसे अकबर के चित्रकारों ने अपने चित्रों में प्रस्तुत किया है। सूफी सन्तों का चित्रण भी अकबरी चित्रों में दृष्टिगोचर होता है। अकबर खुद सूफी सन्तों का बहुत आदर करता था।

अकबरकालीन चित्रकला भिन्न–भिन्न चित्रों की कला थी, जिसमें अधिकतर लघु पुस्तक चित्रण हुआ है। अकबरकालीन चित्रकारों ने छवि चित्रों में भी विशेष सफलता प्राप्त की थी।

प्रत्येक युग में चित्र सृजन चित्रकार की अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति व आवश्यक्ता के परिणामस्वरूप होता रहा है। सभी देशों में कला का अपना स्त्रोत निरंतर होते हुए निर्वाद रूप में विकसित हुआ है, इसी विकास के फलस्वरूप सभी के साथ–साथ विषयवस्तु में भी परिवर्तन हुआ। इस परिर्वतन का कारण समय के अनुसार उपलब्ध साधनों में भिन्नता होना है। इन भिन्नताओं में देशकाल परिस्थितियाँ भी सम्मिलित है और इन सभी विभिन्नताओं का सम्मिश्रण युगल कला में अकबरकालीन इस्लामिक चित्र रचनाओं में भरपूर देखने को मिलता है।

अकबरकाल में यथार्थ विषयों को प्रमुखता दी गई। काल्पनिक विषय नगण्य रहे। इस काल में विषय वस्तु असीमित थी। इस समय भारतीय–अभारतीय ग्रन्थों, ऐतिहासिक विषय, व्यक्ति, चित्र, पेड़–पौधे ,पशु–पक्षियों, योरोपियन विषयों आदि सभी का चित्रण सफलता पूर्वक हुआ है।

संदर्भ :

(1) गुप्ता, लक्ष्मीनाराण : मुगलकालीन भारत, आगरा।

(2) *अरोड़ा, एस. सी. : मध्ययुगीन भारत का इतिहास, जालधर।*

(3) *अग्रवाल, गिरिराजकिशोर : रूपंकर, द्वितीय संस्करण, अलीगढ़।*

(4) *अशोक : इरान की चित्रकला, ललित कला प्रकाशन, अलीगढ़।*

(5) *शर्मा एवं अग्रवाल : रूपप्रद काल के मूलाधार, मेरठ।*

❁❁